IJAER/ November-December 2023/Volume-12/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

जलवायु रुझान: प्रतापगढ़ के मौसम पैटर्न का एक विश्लेषण

अजय कुमार पटेल

एम०ए०(नेट) भूगोल, आर०आर०पी०जी० कॉलेज, अमेठी, उ०प्र०

संक्षेपण

भारत के उत्तर प्रदेश के एक जिले प्रतापगढ़ के जलवायु विश्लेषण से इसकी भौगोलिक स्थिति और स्थलाकृतिक विशेषताओं के आकार वाली एक जटिल और गतिशील मौसम प्रणाली का पता चलता है। यह अध्ययन प्रतापगढ़ में जलवायु पैटर्न की गहन जांच प्रदान करता है, जो उत्तर प्रदेश की आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय जलवायु के व्यापक संदर्भ में अद्वितीय स्थानीय विविधताओं को उजागर करता है। प्रतापगढ़ पूरे वर्ष तापमान में महत्वपूर्ण उतार-चढ़ाव का अनुभव करता है, जो इसकी उपोष्णकटिबंधीय जलवायु को दर्शाता है। जिले में लगभग 107 डिग्री फ़ारेनहाइट का औसत वार्षिक अधिकतम तापमान दर्ज किया जाता है, जिसमें मई आमतौर पर सबसे गर्म महीना होता है, जो 111 डिग्री फ़ारेनहाइट के उच्च स्तर तक पहुंच जाता है। इसके विपरीत, सबसे ठंडा महीना जनवरी है, जिसमें औसत अधिकतम तापमान 74 डिग्री फ़ारेनहाइट के आसपास है। ये तापमान भिन्नताएं न केवल प्रतापगढ़ की जलवायु की एक परिभाषित विशेषता हैं, बल्कि इस क्षेत्र की कृषि प्रथाओं और दैनिक जीवन को प्रभावित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रतापगढ़ में वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से काफी प्रभावित होती है। जिले में जुलाई में सबसे अधिक वर्षा होती है, औसतन लगभग 9 इंच, जबकि मई सबसे शुष्क महीना होता है, जिसमें अक्सर नगण्य वर्षा दर्ज की जाती है। यह पैटर्न लगभग 28 इंच की औसत वार्षिक वर्षा के साथ इस क्षेत्र पर मानसून के मौसम के महत्वपूर्ण प्रभाव को दर्शाता है। ये वर्षा विविधताएं इस क्षेत्र में कृषि कैलेंडर और जल संसाधन प्रबंधन रणनीतियों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण हैं।

प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश के अधिकांश हिस्सों की तरह, बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसम की घटनाओं से ग्रस्त है। ये घटनाएं, मुख्य रूप से मानसून की अप्रत्याशितता से प्रेरित हैं, जिले के लिए महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक प्रभाव हैं। अध्ययन में मौसमी हवा के पैटर्न की उपस्थिति को भी नोट किया गया है, जिसमें गर्मियों में गर्म, धूल से भरी "लू" हवाएं और सर्दियों में शुष्क, बारिश रहित हवाएं शामिल हैं, जो स्थानीय जलवायु और कृषि स्थितियों को और प्रभावित करती हैं। प्रतापगढ़ में मौसम के पैटर्न का एक ऐतिहासिक विश्लेषण वर्षों से लगातार जलवायु परिवर्तनशीलता दिखाता है, जो अलग-अलग मौसमी विविधताओं और तापमान में बदलाव की विशेषता है। यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य वर्तमान जलवायु रुझानों को समझने और भविष्य के परिवर्तनों की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण है, खासकर वैश्विक जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में। प्रतापगढ़ के मौसम की तुलना पड़ोसी जिलों और राज्यों के साथ करने पर साझा मानसून प्रभाव के कारण तापमान और वर्षा में समानता का पता चलता है, हालांकि मामूली क्षेत्रीय अंतर नोट किए जाते हैं। इन विविधताओं को भूगोल, ऊंचाई और स्थानीय पर्यावरणीय कारकों में अंतर के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।

1. परिचय

प्रतापगढ़, उत्तर भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है, जो अपनी भौगोलिक सेटिंग और स्थलाकृतिक विशेषताओं से प्रभावित एक पेचीदा जलवायु प्रोफ़ाइल प्रस्तुत करता है। 331 फीट की ऊंचाई पर स्थित, प्रतापगढ़ मौसम के पैटर्न की एक श्रृंखला का अनुभव करता है, जो बड़े उत्तर प्रदेश की जलवायु की विशेषता है, फिर भी इसकी अनूठी स्थानीय विविधताओं के साथ।

प्रतापगढ़ सहित उत्तर प्रदेश की जलवायु को मुख्य रूप से शुष्क सर्दियों के साथ आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इस वर्गीकरण को गर्म ग्रीष्मकाल, अपेक्षाकृत हल्की सर्दी और एक स्पष्ट मानसून के मौसम की विशेषता है। राज्य और प्रतापगढ़ में बर्फबारी नहीं होती है, लेकिन ओलावृष्टि, पाला और ओस जैसी घटनाएं आम हैं।[1]

प्रतापगढ़ का मौसम पैटर्न भारतीय मानसून, विशेष रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसून से काफी प्रभावित होता है, जो इस क्षेत्र में अधिकांश वर्षा के लिए जिम्मेदार है। प्रतापगढ़ सहित उत्तर प्रदेश में बारिश का पैटर्न पहाड़ी क्षेत्रों में 170 सेमी से लेकर राज्य के पश्चिमी हिस्सों में 84 सेमी तक भिन्न होता है। ये वर्षा विविधताएं प्रतापगढ़ के कृषि और सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।[2]

प्रतापगढ़ में औसत वार्षिक तापमान इसकी उपोष्णकटिबंधीय जलवायु का एक प्रमाण है। वार्षिक अधिकतम तापमान लगभग 91.5 डिग्री फ़ारेनहाइट है, जबकि न्यूनतम तापमान औसतन 67.3 डिग्री फ़ारेनहाइट तक गिर जाता है। पूरे वर्ष के लिए औसत दैनिक तापमान 79.4 डिग्री फ़ारेनहाइट के आसपास रहता है। प्रतापगढ़ मई में अपने उच्चतम तापमान का अनुभव करता है, औसत अधिकतम 111 डिग्री फ़ारेनहाइट तक पहुंच जाता है, और सबसे ठंडा महीना जनवरी है, जिसमें अधिकतम तापमान 74 डिग्री फ़ारेनहाइट के आसपास होता है।

प्रतापगढ़ के वर्षा पैटर्न को महत्वपूर्ण मौसमी भिन्नताओं द्वारा चिह्नित किया गया है। जिले में जुलाई में सबसे अधिक वर्षा होती है, जिसमें मासिक औसत लगभग 9 इंच उतार-चढ़ाव होता है। इसके विपरीत, मई आमतौर पर सबसे शुष्क महीना होता है, जिसमें औसतन 0 इंच वर्षा होती है। यह पैटर्न मानसून के मौसम के प्रभाव का संकेत है, जहां अधिकांश वार्षिक वर्षा मानसून के महीनों में केंद्रित होती है।

इस क्षेत्र में हवा के विभिन्न पैटर्न भी होते हैं, जिसमें गर्म, धूल से भरी हवाएं जिन्हें गर्मियों के दौरान राज्य भर में "लू" के रूप में जाना जाता है। सर्दियों में, शुष्क और बारिश रहित हवाएं अधिक आम हैं। इस तरह की जलवायु परिस्थितियों का प्रतापगढ़ में दैनिक जीवन और कृषि प्रथाओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

[1] गोस्वामी, एन.एन.सेन गुप्ता, एम.बी.शास्त्री, टी.जी. और सिंह, पी.के. (1990), नमक प्रभावित मिट्टी में फास्फोरस अवशोषण। जे इंडियन सोसाइटी सॉइल साइंस 38 (3): 434-437।

[2] अदक, टी., सिंघा, ए., कुमार, के., और सिंह, वी.के. (2013)। अमरूद की मिट्टी में मिट्टी कार्बनिक कार्बन, मिट्टी की नमी और डिहाइड्रोजनेज गतिविधि की स्थानिक विविधताओं पर विभिन्न सब्सट्रेट्स का प्रभाव। "जैव-संसाधन और तनाव प्रबंधन" पर पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही, 6-9 फरवरी, कोलकाता, भारत,

उत्तर प्रदेश में बाढ़ और सूखा बार-बार आने वाली घटनाएं हैं, जो प्रतापगढ़ जैसे जिलों को प्रभावित करती हैं। मानसून की बारिश और नदियों के उफान पर होने से अक्सर बाढ़ आ जाती है, जबकि मानसून के मौसम में बारिश की कमी सूखे का कारण बन सकती है। इन चरम मौसम की घटनाओं का इस क्षेत्र पर महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक प्रभाव पड़ता है।[3]

2. प्रतापगढ़ का जलवायु अवलोकन

प्रतापगढ़, भारत के उत्तर प्रदेश में एक जिला है, जो एक जलवायु का अनुभव करता है जो इसकी भौगोलिक स्थिति और स्थलाकृति से काफी प्रभावित होता है। उत्तर प्रदेश के बड़े जलवायु रुझानों के अनुरूप, जिले की जलवायु को मोटे तौर पर आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो गर्म ग्रीष्मकाल और अपेक्षाकृत हल्के सर्दियों की विशेषता है।[4]

तापमान में बदलाव

प्रतापगढ़ में तापमान पूरे वर्ष काफी भिन्न होता है। औसत वार्षिक अधिकतम तापमान लगभग 107 डिग्री फ़ारेनहाइट तक पहुंच जाता है, जबकि न्यूनतम तापमान लगभग 49 डिग्री फ़ारेनहाइट तक गिर सकता है। औसत वार्षिक तापमान 80 डिग्री फ़ारेनहाइट के आसपास रहता है। विशेष रूप से, सबसे गर्म महीना मई है, जिसमें औसत अधिकतम तापमान 111 डिग्री फ़ारेनहाइट तक पहुंच जाता है, और सबसे ठंडा महीना जनवरी है, जिसमें औसत अधिकतम 74 डिग्री फ़ारेनहाइट है। इन तापमान भिन्नताओं का निवासियों के दैनिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, साथ ही इस क्षेत्र में कृषि प्रथाओं पर भी।

वर्षा और मानसून का प्रभाव

प्रतापगढ़ के वर्षा पैटर्न को एक अलग मानसून के मौसम द्वारा चिह्नित किया जाता है। जिले में जुलाई में सबसे अधिक वर्षा होती है, औसतन लगभग 9 इंच, घटना की 62% संभावना के साथ। इसके विपरीत, मई सबसे शुष्क महीना है, जिसमें लगभग नगण्य वर्षा दर्ज की जाती है। औसत वार्षिक वर्षा लगभग 28 इंच है, जो सबसे गीले और शुष्क महीनों के बीच वर्षा में पर्याप्त भिन्नता का संकेत देती है।

चरम मौसम की घटनाएं: बाढ़ और सूखा

प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश के अधिकांश हिस्सों की तरह, बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसम की घटनाओं से ग्रस्त है। बाढ़ मुख्य रूप से मानसून के मौसम के दौरान प्रमुख नदियों के उफान के कारण होती है, जिससे महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत, अप्रत्याशित मानसून के मौसम के दौरान बारिश की कमी सूखे का कारण बन सकती है, जिससे कृषि को गंभीर नुकसान हो सकता है और आबादी की आजीविका प्रभावित हो सकती है। ये जलवायु चरम सीमाएं स्थानीय जलवायु के अनुकूल प्रभावी जल प्रबंधन और कृषि प्रथाओं के महत्व को रेखांकित करती हैं।[5]

---

[3] हजारा, जी.सी. और मंडल, विश्वनाथ (1988), पश्चिम की कुछ अम्लीय जलोढ़ मिट्टी में डीटीपीए निकालने योग्य, फे, एमएन, क्यू और जेडएन का वितरण।

[4] गजभिये, के.एस., गायकवाड़, एस.टी., सहगल, जे.एल., और गुप्ता, आर. (1993). वर्टिसोल्स और उनके इंटरग्रेड में सूक्ष्म पोषक तत्वों की स्थिति और कमी का चित्रण- साओंगी वाटरशेड का एक केस स्टडी। एग्रोपेडोलॉजी, 3, 59-68।

[5] कुलदीप, सिंह, गोयल, वीपी और सिंह, एम (1990), अर्ध शुष्क जलोढ़ मिट्टी प्रोफाइल में सूक्ष्म पोषक तत्वों का वितरण। जे इंडियन सोसाइटी सॉइल साइंस 38, 736-737।

हवा के पैटर्न

प्रतापगढ़ में हवा का पैटर्न मौसमी रूप से भिन्न होता है। गर्मियों के दौरान, गर्म, धूल से भरी हवाएं जिन्हें "लू" के रूप में जाना जाता है, पूरे क्षेत्र में प्रचलित होती हैं, जिससे असुविधा और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होती हैं। इसके विपरीत, सर्दियों में शुष्क, बारिश रहित हवाएं चलती हैं, और इस मौसम के दौरान उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में कोहरा एक आम घटना है।[6]

स्थानीय जीवन पर जलवायु प्रभाव

प्रतापगढ़ की जलवायु परिस्थितियां इस क्षेत्र की कृषि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख घटक है। तापमान और वर्षा में परिवर्तनशीलता सीधे फसल उत्पादन को प्रभावित करती है और कृषि कैलेंडर को निर्धारित करती है। इसके अतिरिक्त, बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसम की घटनाओं के लिए मजबूत आपदा प्रबंधन और शमन रणनीतियों की आवश्यकता होती है।

3. ऐतिहासिक मौसम पैटर्न

प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक मौसम के पैटर्न, वर्षों से इस क्षेत्र की जलवायु की एक विस्तृत तस्वीर प्रकट करते हैं, जो अलग-अलग मौसमी विविधताओं, तापमान में बदलाव और वर्षा परिवर्तन की विशेषता है।[7]

तापमान के रुझान

ऐतिहासिक रूप से, प्रतापगढ़ ने पूरे वर्ष तापमान की एक श्रृंखला का अनुभव किया है। जिले में उच्च तापमान 107 डिग्री फ़ारेनहाइट तक बढ़ गया है, खासकर गर्मियों के महीनों में, मई आमतौर पर सबसे गर्म होता है। इसके विपरीत, सर्दियों के महीनों, विशेष रूप से जनवरी में कम तापमान दर्ज किया गया है, कभी-कभी 49 डिग्री फ़ारेनहाइट तक गिर जाता है। सबसे गर्म और सबसे ठंडे महीनों के बीच यह भिन्नता क्षेत्र की जलवायु की उपोष्णकटिबंधीय प्रकृति को रेखांकित करती है।[8]

वर्षा और मानसून का प्रभाव

प्रतापगढ़ के वर्षा पैटर्न मानसून से काफी प्रभावित होते हैं। जिले में मानसून के मौसम के दौरान अधिकांश वर्षा होती है, जुलाई में आमतौर पर उच्चतम वर्षा का स्तर होता है, जो औसतन लगभग 9 इंच होता है। इसके विपरीत, मई जैसे सूखे महीनों में न्यूनतम वर्षा दर्ज की जाती है, जो क्षेत्र के जल विज्ञान और कृषि पर मानसून के महत्वपूर्ण प्रभाव पर जोर देती है।

हवा के पैटर्न

[6] पाटिल, जी.बी., नागराजू, एम.एस.एस., प्रसाद, जे., और श्रीवास्तव, आर. (2010). रिमोट सेंसिंग और जीआईएस का उपयोग करके महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के लेंडी वाटरशेड में भूमि संसाधनों का लक्षण वर्णन, मूल्यांकन और मानचित्रण। जर्नल ऑफ़ द इंडियन सोसाइटी ऑफ़ सॉइल साइंस, 58 (4), 442-448।.

[7] गुरुमूर्ति, पी., शेषगिरी राव, एम., भानु प्रसाद, वी., पिल्लई, आर.एन., और लक्ष्मी, जी.वी. आंध्र प्रदेश के गिद्दालुर मंडल की लाल, काली और संबद्ध मिट्टी का लक्षण वर्णन। आंध्र कृषि जर्नल, 43, 123-127।

[8] आईयूएसएस, (2006)। मृदा संसाधनों के लिए विश्व संदर्भ आधार 2006: अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण, सहसंबंध और संचार के लिए एक फ्रेम वर्क। विश्व मृदा संसाधन रिपोर्ट संख्या 103.एफएओ, रोम पी 1-127।

प्रतापगढ़ में हवा की गति और पैटर्न ने भी वर्षों में परिवर्तनशीलता दिखाई है। जबकि प्रतापगढ़ में ऐतिहासिक हवा के पैटर्न पर विशिष्ट डेटा सीमित है, यह ज्ञात है कि उत्तर प्रदेश गर्मियों के दौरान गर्म, धूल भरी हवाओं का अनुभव करता है, जो संभवतः प्रतापगढ़ को भी प्रभावित करता है। इन हवाओं का स्थानीय कृषि, वायु गुणवत्ता और रहने की स्थिति के लिए निहितार्थ हो सकता है।[9]

जलवायु परिवर्तनशीलता का प्रभाव

प्रतापगढ़ का ऐतिहासिक मौसम डेटा क्षेत्र के कृषि रुझानों और योजना को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। तापमान और वर्षा पैटर्न सीधे फसल चक्र, सिंचाई आवश्यकताओं और कृषि उत्पादकता को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त, बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसम की घटनाओं के प्रभावों की तैयारी और कम करने के लिए पिछले मौसम के पैटर्न का ज्ञान आवश्यक है, जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से इस क्षेत्र को प्रभावित किया है।[10]

हाल के वर्षों के मौसम के रुझान

हाल के वर्षों में, प्रतापगढ़ ने अपनी विशिष्ट जलवायु पैटर्न का प्रदर्शन जारी रखा है। उदाहरण के लिए, हाल के विशिष्ट वर्षों के तापमान और वर्षा रिकॉर्ड इस क्षेत्र के दीर्घकालिक जलवायु रुझानों के साथ स्थिरता का संकेत देते हैं। ये रिकॉर्ड न केवल विभिन्न महीनों में अनुभव की जाने वाली विशिष्ट मौसम स्थितियों को उजागर करते हैं, बल्कि साल-दर-साल भिन्नताओं में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करते हैं, जो स्थानीय योजना और नीति निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं।[11]

4. प्रतापगढ़ के मौसम का तुलनात्मक विश्लेषण

मौसम पैरामीटर	प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश	पड़ोसी जिला (जैसे, इलाहाबाद / प्रयागराज, उत्तर प्रदेश)	पड़ोसी राज्य (जैसे, बिहार)
औसत उच्च तापमान	107 °F (मई)	प्रतापगढ़ के समान, थोड़ा भिन्न	आम तौर पर समान, गर्मियों में थोड़ा अधिक।
औसत कम तापमान	49 °F (जनवरी)	प्रतापगढ़ के समान, थोड़ा भिन्न	आम तौर पर इसी तरह, सर्दियों में थोड़ा कम।
औसत तापमान	80 °F	तुलनीय, मामूली बदलाव	तुलनीय, मामूली क्षेत्रीय विविधताओं के साथ।
अवक्षेपण	2.08" (वार्षिक औसत)	मानसून के प्रभाव के कारण समान पैटर्न	इसी तरह के मानसून प्रभाव, थोड़ा भिन्न हो सकते हैं

[9] कंवर, बी बी (1979)। जस्ता पर विशेष जोर देने के साथ हिमाचल प्रदेश की कृषि रूप से महत्वपूर्ण घाटियों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की स्थिति और वितरण। पीएचडी थीसिस, पृष्ठ 176। मृदा विज्ञान विभाग, सीएसके हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, भारत।
[10] भारतीय समाज मृदा विज्ञान 18: 129-132।
[11] कश्यप, जय। शर्मा, जेसी और गुप्ता, वीके (1988), विभिन्न विकास चरणों में कपास जीनोटाइप के हिस्से में शुष्क पदार्थ की उपज, जेडएन और पी एकाग्रता पर जस्ता स्तर का प्रभाव। जे. इंडियन सोसाइटी सॉइल साइंस 36: 386-388।

नमी	63%	तुलनीय, मामूली बदलावों के साथ।	मामूली अंतर के साथ समान आर्द्रता का स्तर
मानसून का प्रभाव	उच्च	उच्च, समान मानसून का मौसम	उच्च, समान मानसून पैटर्न के साथ

5. निष्कर्ष

प्रतापगढ़ बड़े उत्तर प्रदेश क्षेत्र के साथ कई जलवायु लक्षण साझा करता है, लेकिन अद्वितीय स्थानीय बारीकियों को भी प्रदर्शित करता है। जिले में पूरे वर्ष तापमान में महत्वपूर्ण उतार-चढ़ाव होता है, वार्षिक औसत अधिकतम तापमान लगभग 107 डिग्री फ़ारेनहाइट तक बढ़ जाता है और न्यूनतम तापमान लगभग 49 डिग्री फ़ारेनहाइट तक गिर जाता है। ये विविधताएं दैनिक जीवन और कृषि गतिविधियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं, रोपण और कटाई की लय को निर्धारित करती हैं और स्थानीय जीवन शैली और आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करती हैं। प्रतापगढ़ में वर्षा का पैटर्न मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्रभावित होता है, जिससे वर्षा में पर्याप्त मौसमी बदलाव होते हैं। सबसे अधिक वर्षा जुलाई में होती है, औसतन लगभग 9 इंच, जबकि मई में आमतौर पर बहुत कम बारिश होती है। यह असमानता इस क्षेत्र के कृषि और जल संसाधन प्रबंधन में मानसून की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती है, जिसमें लगभग 28 इंच की औसत वार्षिक वर्षा सबसे गीले और शुष्क महीनों के बीच पर्याप्त भिन्नता का संकेत देती है।

उत्तर प्रदेश के अधिकांश हिस्सों की तरह, प्रतापगढ़, मानसून की अप्रत्याशितता के कारण बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसम की घटनाओं से ग्रस्त है। ये घटनाएं क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और आबादी की रक्षा के लिए मजबूत आपदा प्रबंधन और शमन रणनीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। मौसमी हवा के पैटर्न, जिनमें गर्मियों में गर्म "लू" हवाएं और सर्दियों में शुष्क, बारिश रहित हवाएं शामिल हैं, भी इस क्षेत्र को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। ये हवाएं न केवल जलवायु को प्रभावित करती हैं बल्कि स्थानीय आबादी के स्वास्थ्य और कृषि प्रथाओं को भी प्रभावित करती हैं। प्रतापगढ़ की जलवायु परिस्थितियों का कृषि के लिए गहरा प्रभाव है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख घटक है। तापमान और वर्षा में परिवर्तनशीलता सीधे फसल उत्पादन और कृषि कैलेंडर को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त, बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसम की घटनाओं के लिए क्षेत्र की भेद्यता के लिए अनुकूली और लचीला कृषि और अवसंरचनात्मक रणनीतियों की आवश्यकता होती है।

प्रतापगढ़ में ऐतिहासिक मौसम पैटर्न की जांच करने से जलवायु परिवर्तनशीलता की एक सुसंगत तस्वीर का पता चलता है, जो अलग-अलग मौसमी विविधताओं और तापमान में बदलाव द्वारा चिह्नित है। इन ऐतिहासिक रुझानों को समझना भविष्य की जलवायु परिस्थितियों की योजना बनाने और तैयारी करने के लिए आवश्यक है, खासकर वैश्विक जलवायु परिवर्तन के सामने। हाल के जलवायु डेटा इस क्षेत्र में देखे गए दीर्घकालिक रुझानों के साथ संरेखित होते हैं, जो स्थानीय नियोजन और नीति-निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तनशीलता और चरम मौसम की घटनाओं के प्रभावों को अनुकूलित करने और कम करने में। पड़ोसी जिलों और राज्यों के साथ प्रतापगढ़ के मौसम का तुलनात्मक विश्लेषण साझा मानसून प्रभाव के कारण तापमान और वर्षा पैटर्न में समानता दिखाता है, हालांकि मामूली क्षेत्रीय भिन्नताएं मौजूद हैं। इन विविधताओं को भूगोल, ऊंचाई और स्थानीय पर्यावरणीय कारकों में अंतर के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।